Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

हिन्दी का वैश्विक स्वरूप एवं विस्तार

Suman*

M.Phil. (Hindi) NET, Village Bhodiya Bisnoiya, Distric Mandi Adampur, Hisar

सार – *हिन्दी विश्व की श्रेष्ठ एवं समृद्ध भाषा है। विकासशील देशों में हिन्दी की लोकप्रियता निरंतर बढ़ती जा रही है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि दुनिया के करीब 137 देशों में, भारतीय मूल के लोग रहते हैं और उनकी सम्पर्क भाषा हिन्दी है। पूर्व प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी ने नागपुर में हुए प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा था कि हिन्दी संसार की महान् भाषाओं में एक है और आज इसे देश-विदेश में करोड़ों लोग जानते हैं और व्यवहार में लाते हैं। विश्व में इसकी लोकप्रियता निरंतर बढ़ती जा रही है।1 गौरव की बात यह है कि भारत के बाहर लगभग 125 विश्वविद्यालयों में हिन्दी का पठन-पाठन हो रहा है। जब हम विश्व के रंगमंच पर खड़े होकर देखते हैं कि विदेशों के अनेक स्थानों पर हिन्दी का व्यवहार और पठन-पाठन बड़े उत्साह से हो रहा है। यहाँ उन कतिपय देशों का उल्लेख किया जा रहा है, जहाँ हिन्दी लिखी और बोली जाती है।*

----------X----------

मॉरिशस और हिन्दी:

मॉरिशस एक ऐसा देश है जिसके द्वारा राष्ट्रसंघ में हिन्दी के प्रवेश का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया था। वस्तुतः मॉरिशस पहला देश है जहाँ संसद द्वारा कानून बनाकर हिन्दी को बढ़ावा देने का दायित्व सरकार ने संभाला है।2 नागपुर में हुए विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर मॉरिशस के तत्कालीन क्रीड़ा मंत्री दयानंद लाल बसंतराय ने कहा था- "हिन्दी हमारी संस्कृति और धर्म की भाषा है। हिन्दी हमारे उन्मुक्त चिंतन की भाषा है। हिन्दी ऐसी भाषा है जिसके द्वारा हम विश्व के बहुत बड़े जनसमुदाय से जुड़े हैं। उससे कटना हमारे लिए संभव नहीं है।"3 उन्होंने आगे कहा -"हम हिन्दी को व्यवसाय-लाभ के लिए नहीं, राजकाज, संचालन के लिए नहीं, स्वांत सुखाय के लिए पढ़ रहे हैं, सीख रहे हैं। हिन्दी है तो हमारा अस्तित्व है, हमारा धर्म, हमारी संस्कृति सब हिन्दी पर आधारित है।"4 मॉरिशस में सन् 1976 में द्वितीय हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर वसंत राय ने अपने स्वागत भाषण में कहा था- "हमारे पूर्वजों ने अपनी भाषा और संस्कृति की रक्षा में अपना सर्वस्व दाँव पर लगा दिया था। उन्होंने समझ लिया था कि हमारी भाषा बनी रही तो संस्कृति भी बनी रहेगी तथा हमारा अस्तित्व भी बना रहेगा। हिन्दी हमारी अस्मिता का प्रतीक है।"5 अकेले मॉरिशस में लगभग 42 हिन्दी पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं। जिनमें प्रमुख हैं- 'मॉरिशस आर्य पत्रिका', मॉरिशसमित्र', 'आर्यवीर', 'सनातन धर्मांक', 'बसंत', 'दुर्गा', 'जागृति', 'आर्यवीर जागृति', 'जनता', 'जमाना', 'मजदूर', 'अनुराग', 'नवजीवन', 'समाजवाद', 'बाल-सखा', 'दर्पण', 'आभा निर्माण', 'प्रभात', 'प्रकाश', 'त्रिवेणी', 'स्वदेश', 'इन्द्र धनुष', 'मुक्ता', 'भारत दर्शन', 'पंकज' आदि। उक्त पत्र-पत्रिकाएँ दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, द्वैमासिक, त्रैमासिक आदि रूपों में छपती हैं। मॉरिशस के साहित्यकारों में अभिमन्यु अनत, डॉ. भीमसेन जगासिंह, सत्यदेव टेंगर, प्रहलाद रामशरण आदि ने हिन्दी की विविध विधाओं में पर अपनी लेखनी चलाई है। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अनेक हिन्दी स्वयंसेवी संस्थाओं में 'हिन्दी परिषद्', 'आर्य सभा', 'हिन्दी प्रचारिणी सभा', 'हिन्दी लेखक संघ', 'हिन्दी शिक्षक संघ' आदि उल्लेखनीय हैं।

सूरीनाम और हिन्दी:

5 जून 1873 में भारतीय मजदूर सूरीनाम में पहुंचे थे। सूरीनाम के भारतवंशी भोजपुरी, अवधी और खड़ीबोली का प्रयोग करते हैं। इस देश में राजकाज को छोड़कर सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में हिन्दी का प्रयोग करते हैं। सूरीनाम के आर्य समाज की हिन्दी के प्रचार-प्रसार में विशेष योगदान रहा है। आर्य समाज द्वारा प्रकाशित 'आर्य-दिवाकर' नामक पत्रिका की विशेष भूमिका रही है। 'सूरीनाम हिन्दी परिषद्' की हिन्दी के प्रचार-प्रसार में विशेष भूमिका रही है। सूरीनाम के हिन्दी-सेवी महानुभावों में सर्वश्री जानकी प्रसाद सिंह, डॉ. ज्ञान अधीन, डॉ. उमादत्त शर्मा 'सतीश', शेर बहादुर झा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन्होंने हिन्दी की विभिन्न विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई है।

www.ignited.in

नेपाल और हिन्दी:

नेपाल में अनेक हिन्दी पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है। नेपाल में हिन्दी पत्रकारिता का प्रारंभ मोतीलाल भट्ट ने किया। त्रिभुवन विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. कृष्णचन्द्र मिश्र ने 'साहित्यलोक' त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन किया। सन् 1934 में रंगून से 'प्राची प्रकाश' नामक हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन हुआ। रंगून से ही प्रकाशित हिन्दी मासिक पत्रिका 'ब्रह्मभूमि' हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दे रही है। पं. जगतनारायण उपाध्याय, पं. श्यामचरण मिश्र, पं. हरिवदन शर्मा, राम प्रसाद शर्मा इस देश के प्रमुख हिन्दी साहित्यकार हैं। कुमारी सुनीता कालरा एक अच्छी कहानीकार हैं। श्रीमती मानवती आर्या की एक श्रेष्ठ लेखिका हैं। उनकी अनेक हिन्दी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।6

जापान और हिन्दी

जापान में हिन्दी के शिक्षण की व्यवस्था अनेक वर्षों से चल रही है। तोक्यो विदेशी भाषा विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में लगभग पचास हजार से अधिक हिन्दी पुस्तकें हैं जिनमें अनेक दुर्लभ ग्रंथ हैं।7 प्रो. दोई ने सन् 1959 में प्रेमचंद के 'गोदान' का जापानी भाषा का अनुवाद किया था, जिसकी एक लाख से अधिक प्रतियाँ बिक चुकी हैं।8 कूयाया दोई, प्रो. एइजोसाना, तोशियो तानाका, प्रो. कात्सुरो कोंगा, तिमीयो मिजोकमि, तेइजि साकाता, नाकामुरा, डॉ. लक्ष्मीधर मालवीया, डॉ. नरेश मंत्री, डॉ. रमेश माथुर आदि जापान के हिन्दी लेखक हैं। जिन्होंने हिन्दी की अनेक विधाओं पर लेखनी चलाई है।

फीजी और हिंदी:

फीजी में हिन्दी के विकास का इतिहास सौ साल से अधिक पुराना है। फीजी में हिन्दी कम्प्यूटर की सुविधा है, जिससे वहाँ पुस्तकें व पत्रिकाएँ हिन्दी में छपती हैं।9 डॉ. विवेकानन्द शर्मा ने 1983 में 'तुलसी का प्रवासी फीजी निवासी भारतीयों पर प्रभाव' विषय पर पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। श्री जोगेन्द्र सिंह 'कँवल' ने दो उपन्यास हिन्दी में लिखे हैं जिनके शीर्षक हैं- 'धरती मेरी माता' व 'सवेरा'।

ऑस्ट्रेलिया और हिन्दी:

सन् 1978 से इस देश के 'मेलबोर्न' नामक शहर में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। यहाँ विक्टोरिया राज्य में स्कूल स्तर पर हिंदी पढ़ाई जा रही है। हिन्दी पढ़ाने की योजना के तहत सन् 1993 में 'राष्ट्रीय दक्षिण एशियाई अध्ययन केन्द्र' की स्थापना की गई। श्रीमती सुधा जोशी अनेक वर्षों से इस केन्द्र में हिन्दी पढ़ा रही हैं। डॉ. दिनेश श्रीवास्तव विक्टोरिया में हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु 'हिन्दी केन्द्र' चला रहे हैं।

रूस और हिन्दी:

रूस में योगेन्द्र नागपाल ने 693 पृष्ठों का 'हिन्दी व्याकरण' का प्रकाशन कराया है। प्रो. दीमशित्य ने इस ग्रंथ में अपने अध्ययन-अध्यापन और अनुसंधान के सुदीर्घ अनुभव के आधार पर हिन्दी भाषा को एक संगोपांग व्याकरण देने का प्रयास किया। पं. कामता प्रसाद गुरु के 'हिन्दी व्याकरण' और किशोरीदास वाजपेयी के 'हिन्दी शब्दानुशासन' के बाद यह पहली बार एक ऐसा ग्रंथ आया, जिसे हिन्दी भाषा के व्याकरण के क्षेत्र में एक नया मानदंड कहा जा सकता है।10 सन् 1948 में सोवियत संघ की 'विज्ञान अकादमी' द्वारा तुलसीकृत 'रामचरित मानस' का रूसी भाषा में छंदोबद्ध अनुवाद किया गया। रूसी विद्वान बी.एस. बेसक्रोनी ने प्रेमचंद की अनेक रचनाओं का रूसी अनुवाद किया है। प्रोफेसर केलिशेव ने 'आधुनिक हिन्दी काव्य' का रूसी भाषा में अनुवाद किया। लेलिनग्राड विश्वविद्यालय में महापंडित राहुल सांकृत्यायन सन् 1945 से 1947 तक हिन्दी प्राध्यापक रहे।

जर्मनी और हिन्दी:

जर्मनी में फ्राइवुग की एक प्रकाशन-संस्था है जिसका नाम है- 'वोल्फ येश फेलांग'। इस संस्था ने आधुनिक हिन्दी कवियों की कुछ कविताओं का अनुवाद प्रकाशित किया है। सन् 1970 में 'अभिनव भारतीय पुस्तकालय' का प्रथम पुष्प प्रकाशित हुआ जिसके सम्पादक हैं- डॉ. लोथार लुत्से और विष्णु खरे। इस संकलन में गजानन माधव मुक्तिबोध, शमशेर सिंह, नागार्जुन, त्रिलोचन, रघुवीर सहाय, कुँवर नारायण, श्रीकांत वर्मा, केदारनाथ, लीलाधर जगूड़ी, विष्णु खरे, मलयज की इकत्तर कविताओं का जर्मन अनुवाद प्रस्तुत किया गया है।11 इस ग्रंथ की भूमिका डॉ. लोथार लुत्से ने लिखी है।

इंग्लैण्ड और हिन्दी:

इंग्लैण्ड के हिन्दी लेखकों में दिव्या माथुर, गौतम सचदेव, उषा राजे सक्सेना, मोहन राणा, सत्येन्द्र श्रीवास्तव, कृष्ण अनुराधा, उषा वर्मा, राकेश माथुर, के.जी. खंडेलवाल आदि प्रमुख हैं।12 इंग्लैण्ड में इस समय अंग्रेजी के बाद हिन्दी सर्वाधिक बोली जाती है। लगभग 26 लाख भारतीयों के अलावा, सची एशियाई अपनी बोलचाल में हिन्दी का प्रयोग करते हैं। बी.बी.सी. की हिंदी सर्विस तो जगविख्यात है।

www.ignited.in

इटली और हिन्दी:

'इतावली हिन्दी कोष' का संपादन डॉ. मिलानेती और प्रो. लक्ष्मण प्रसाद मिश्र द्वारा किया गया और यह रोम से प्रकाशित हुआ। रोम में शांति निकेतन के डॉ. लक्ष्मण सिंह तोमर, डॉ. मोहन लाल वाजपेयी हिन्दी प्राध्यापक थे जो यहाँ के लोगों को हिन्दी पढ़ाते थे। वेनिस विश्वविद्यालय में डॉ. लक्ष्मण प्रसाद मिश्र हिन्दी के प्राध्यापक थे। डॉ. श्याममनोहर पांडेय भी ऐंजलिस (रोम) में हिन्दी पढ़ाते थे। वेनिस विश्वविद्यालय के कई विद्यार्थी हिन्दी में पीएच.डी. कर चुके हैं। सन् 1911 में इटली के विद्वान् डॉ. एस.जी. तौस्सीतोरी ने तुलसीकृत 'रामचरित मानस' और 'बाल्मीकि रामायण' का तुलनात्मक शोध-प्रबन्ध लिखकर पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

अमेरिका और हिन्दी:

अमेरिका में हिन्दी भाषा और उसके साहित्य के प्रति बड़ी रुचि है। यही कारण है कि यहाँ के 41 विश्वविद्यालयों में हिन्दी के पठन-पाठन की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। विगत वर्षों में अमेरिका के विद्यार्थियों के लिए बहुत सी पाठ्य-पुस्तकें, कोश आदि तैयार किए गए हैं। यहाँ कैलिफोर्निया, शिकागो, विस्कांसन, टैक्सास, वाशिंगटन, कोलम्बिया विश्वविद्यालयों में हिन्दी के अध्यापन केन्द्र प्रसिद्ध हैं। प्रो. माइकेल सी. शोपिरे हिन्दी का इतिहास लिख रहे हैं। जिससें हिन्दी का विकास अपभ्रंश काल से लेकर आधुनिक खड़ी बोली तक प्रस्तुत किया जाएगा। इस देश में हिन्दी के भक्ति साहित्य पर, तुलसी, मीरा, विद्यापति, जायसी आदि पर अनेक पुस्तकों की रचना हुई है। यहाँ प्राचीनतम हस्तलिखित प्रतियों के आधार पर 'सूरसागर' का नया संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। प्रो. के शोयर और अन्य अमरीकन लोग साहित्य के प्रति जागृत हैं और वे राजस्थान, मध्यप्रदेश आदि की लोक कथाएँ एकत्र करके उनका अनुवाद अंग्रेजी में कर रहे हैं। प्रेमचंद यहाँ के लोगों में लोकप्रिय हैं। जयशंकर 'प्रसाद', निराला, पंत, महादेवी वर्मा, फणीश्वरनाथ रेणु आदि की रचनाओं का अनुवाद किया जा रहा है। सेम्युल केलांग यहाँ के प्रसिद्ध विद्वान् हैं, जिन्होंने 'ए ग्रामर ऑफ़ हिन्दी लैंग्वेज' नामक ग्रंथ लिखा है। भारतीय विद्याभवन, बाल भारती, भारतीय साहित्य संगम, अदबी संगम, विश्व हिन्दी समिति आदि संस्थाएँ हिन्दी के प्रचार-प्रसार में लगी हुई हैं।13 'विश्वा', 'सौरभ', 'विश्वविवेक' आदि यहाँ की लोकप्रिय हिन्दी पत्रिकाएँ हैं।

नार्वे और हिन्दी:

यहाँ के सुरेशचन्द्र शुक्ल ने 1988 में 'स्पाइल' (दर्पण) द्विमासिक पत्रिका निकाली, जो अब तक निकल रही है। यह पत्रिका हिन्दी, नार्वेनियन और अंग्रेजी में छपती है। इस पत्रिका की आधे से ज्यादा सामग्री हिन्दी में होती है।14 'शांतिदूत' भी हिन्दी में छपती है जो यहाँ की लोकप्रिय पत्रिका है।

थाईलैंड और हिन्दी:

थाईलैंड में 'विश्वभारती' (शांतिनिकेतन) के स्नातक श्री करुणा कुशलाशय हिन्दी के प्रचार-प्रसार में जुटे हुए हैं। बैंकाक की 'थाई-भारत सांस्कृतिक संस्था' हिन्दी के लिए विशेष कार्य कर रही है।

अर्जेंटिना, बंगला देश, भूटान, ब्राजील, कोलम्बिया, गुयाना, इंडोनेशिया, कुवैत, मलेशिया, मैक्सिको, ओमान, पाकिस्तान, साउदी अरब, सिंगापुर, श्रीलंका, जांबिया आदि देशों में हिन्दी पढ़ाई जाती है ओर कुछेक लोगों द्वारा बोली भी जानी है।15

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आज के भूमंडलीकरण और वैशवीकरण के दौर में हिन्दी का वर्चस्व दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। अनेक विदेशी कम्पनियाँ अपने कर्मचारियों को हिन्दी सीखने के लिए पे्ररित कर रही हैं ताकि भारत में उनकी पैठ बन सके। आज के इस तकनीकी युग (कम्प्यूटर युग) में हिन्दी में प्रचार-प्रसार की अनेक दिशाएँ खुली हुई हैं। इस दृष्टि से हिन्दी को 'विश्व हिन्दी' कहा जा सकता है। हिन्दी अपनी ताकत से आगे बढ़ रही है।

संदर्भ सूची:

1. श्रीमती इंदिरा गाँधी का भाषण, विश्व हिन्दी, तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन (स्मारिका), पृ. 290
2. आचार्य अखिल विनय, साहित्य, भक्ति और दर्शन का वैभव, (भाग-2), पृ. 1226
3. वही, पृ. 1226
4. वही, पृ. 1226
5. वही, पृ. 1227
6. वही, पृ. 1229

7. वही, पृ. 1229

8. वही, पृ. 1229

9. वही, पृ. 1231

10. वही, पृ. 1231

11. वही, पृ. 1232

12. वही, पृ. 1232

13. वही, पृ. 1234

14. वही, पृ. 1233

15. वही, पृ. 1223-24

Corresponding Author

Suman*

M.Phil. (Hindi) NET, Village Bhodiya Bisnoiya, Distric Mandi Adampur, Hisar